DATE 30.9.24
PAGE No 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-9 'रानी की समाधि पर') भाग 1
कवयित्री- सुभद्रा कुमारी चौहान

पुस्तक - नवतरंग - 8

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!

यह पाठ-9 'रानी की समाधि पर' पृष्ठ-72 पर दिया गया है। आज हम इस पाठ को पढ़ेंगे। सब बच्चे अपनी पुस्तक और अभ्यास-पुस्तिका के साथ पढ़ने के लिए तैयार रहें। मैं पाठ पढ़ाते समय कुछ प्रश्न भी पूछती जाऊँगी। इन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का अंतराल लेंगे। कविता को समझना थोड़ा कठिन होता है। अतः ध्यान से कविता की प्रत्येक पंक्ति को धीरे-धीरे बोलकर पढ़ेंगे तो कविता का अर्थ अच्छे से समझ में आ जाएगा।

यह कविता कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित है। इसमें कवयित्री ने वीरांगना लक्ष्मीबाई जी की गौरव गाथा का वर्णन किया है। रानी लक्ष्मीबाई ने देश की आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी। वे अंग्रेज़ों से लड़ाई लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुईं। भारत की आज़ादी की पहली लड़ाई सन् 1857 में शुरू हुई थी।

बच्चो! रानी लक्ष्मीबाई की समाधि ग्वालियर के फूल बाग में स्थित है। यह समाधि उनके महान त्याग, बहादुरी और देशभक्ति की निशानी है। इस विलक्षण बहादुरी की प्रतीक समाधि को मन से नमन करते हुए पुष्पांजलि अर्पित करते हैं। इसी के साथ पाठ का हम शुभारंभ करते हैं।

इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी॥
यह समाधि, यह लघु समाधि है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की॥ (पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-9 'रानी की समाधि पर')

सब बच्चे इस कविता को धीरे-धीरे उच्च स्वर में पढ़ेंगे। साथ ही कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ भी जानने आवश्यक हैं।

शब्दार्थ:— (i) कार्यस्थली, कर्म क्षेत्र – लीलास्थली (ii) मरदानी- पुरुषों के समान (iii) फेरी – उतारी, फिराई (iv) दिव्य-भव्य, अलौकिक।

भावार्थ:— इन पंक्तियों में कवयित्री यह कह रही हैं कि यह समाधि रानी लक्ष्मीबाई की है। इस समाधि में रानी लक्ष्मीबाई के शरीर की राख (भस्म) की ढेरी समाहित है। यह रानी की छोटी-सी समाधि है, जिन्होंने अपना बलिदान देकर इस स्थान पर स्वतंत्रता की आरती उतारी थी अर्थात् वे स्वयं प्रज्वलित होकर आरती का रूप धारण कर आज़ादी की आरती की। यह समाधि रानी के त्याग और देशभक्ति की निशानी है। यह स्थान रानी की जीवन लीला का अंतिम स्थल है, जहाँ रानी ने वीर पुरुषों जैसी वीरता का उदाहरण प्रस्तुत कर स्वयं का बलिदान कर दिया।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। जिनका उत्तर देने के लिए आप तीन मिनट का कालांश लेंगे।

प्रश्न-1. यह पाठ किसने लिखा है? इस कविता में किसका पराक्रम दर्शाया गया है?

प्रश्न-2. रानी की समाधि कहाँ पर स्थित है?

प्रश्न-3. 'मरदानी' और 'लीलास्थली' का क्या अर्थ है?

बच्चो! अब आपका कालांश समाप्त हुआ।

इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

उत्तर-1 प्रस्तुत कविता को सुभद्राकुमारी चौहान ने लिखा है तथा इस कविता में उन्होंने वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-9 'रानी की समाधि पर')

के पराक्रम को दर्शाया है।

उत्तर-2 रानी लक्ष्मीबाई की समाधि ग्वालियर के फूलबाग में स्थित है।

उत्तर-3 'मरदानी' का अर्थ है पुरुषों के समान बहादुर स्त्री तथा 'लीला स्थली' का अर्थ है- कार्य क्षेत्र या कर्मस्थली।

बच्चो! अब हम कविता को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं

यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न-विजयमाला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृति-शाला-सी॥
सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी॥

इस कविता का अर्थ जानने से पहले शब्दों के अर्थ जान लेते हैं।

शब्दार्थ :- (i) भग्न- टूटा हुआ, खंडित (ii) फूल- अस्थियाँ (iii) संचित- इकट्ठी, जमा (iv) स्मृतिशाला- स्मारक (v) वार- प्रहार, चोट, आघात (vi) बाला- युवती (vii) आहुति- यज्ञ में डाली जाने वाली सामग्री (viii) ज्वाला- आग की लपटें।

भावार्थ :-

प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री कहती हैं कि रानी लक्ष्मीबाई लड़ते-लड़ते अपने अंत समय में टूटी हुई विजयमाला के समान बिखर गई थीं। युद्धक्षेत्र में अंग्रेजी सेना के साथ बहादुरी से लड़ते हुए रानी के शरीरांग यहीं-कहीं टूटी माला के समान बिखर गए थे। इस समाधि में रानी लक्ष्मीबाई की अस्थियाँ एकत्र करके रख दी गई हैं। उनका यह स्मारक के रूप में है जिससे देश की भावी पीढ़ी उनके गौरव-पूर्ण त्याग से प्रेरणा लेकर देशभक्त बन सकें।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 30.9.24
PAGE No 4

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'रानी की समाधि पर')

सुभद्रा कुमारी चौहान कहती हैं कि वीरांगना लक्ष्मीबाई अंतिम साँस तक बहादुर स्त्री की भाँति लड़ीं और उन्होंने दुश्मन की तलवार के वार पर वार सहे। जिस प्रकार यज्ञ कुंड में आहुति पड़ने से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है, उसी प्रकार रानी के बलिदान से आज़ादी की ज्वाला चारों ओर धधक उठी। रानी के इस महानत्याग ने अग्नि में आहुति का काम किया, जिससे जनता उत्साह से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने लगे।

बच्चो! अब मैं कुछ प्रश्न पूछ लेती हूँ, आप यहाँ तीन मिनट का कालांश लेंगे।

प्रश्न-1. अंत समय में रानी किसके समान बिखर गई?
प्रश्न-2. वीरांगना लक्ष्मीबाई अंतिम साँस तक किसके प्रहार सहती रहीं?
प्रश्न-3. यज्ञ कुण्ड में आहुति डालने से क्या होता है?
प्रश्न-4. 'स्मृतिशाला' और 'संचित' का क्या अर्थ है?

बच्चो! यहाँ आपके कालांश की अवधि समाप्त हुई। इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

उत्तर-1. रानी लक्ष्मीबाई अपने अन्त समय में टूटी हुई माला के समान पृथ्वी पर बिखर गई।
उत्तर-2. वीरांगना लक्ष्मीबाई अपनी अंतिम साँस तक अंग्रेज़ों की तलवारों के वार सहती रहीं।
उत्तर-3. यज्ञ कुंड में आहुति डालने से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है।
उत्तर-4. 'स्मृतिशाला' का अर्थ 'स्मारक' और संचित का अर्थ 'एकत्रित' या 'जमा' है।

बच्चो! इस कविता को हम यहीं तक पढ़ेंगे। शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे। आपका गृहकार्य है—

गृहकार्य :— सब बच्चे कराए गए कार्य को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे व याद करेंगे।

(अंतिम पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner